शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026
Page No- 202-206
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

1. रुचि सिंह

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, सेंट एंड्रयूज कॉलेज, गोरखपुर.

2. प्रो. प्रभा सिंह

शोध निर्देशक, सेंट एंड्रयूज कॉलेज, गोरखपुर.

Corresponding Author :

रुचि सिंह

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, सेंट एंड्रयूज कॉलेज, गोरखपुर.

मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में स्त्री-पुरुष के संबंधों का मनोविश्लेषण

सारांश : 'आषाढ़ का एक दिन' की प्रत्यक्ष विषयवस्तु कवि कालिदास के जीवन से सम्बन्धित है। किंतु मूलत: वह उसके प्रसिद्ध होने से पहले की प्रेयसी माल्लिका का नाटक है-एक सीधी-साधी समर्पित लड़की की नियति का चित्र जो एक कवि से प्रेम ही नहीं करती, उसे महान होते भी देखना चाहती हैं। महान व अवश्य बनता है, पर इसका मूल्य मल्लिका अपना सर्वस्व देकर चुकाती है। अंत में कालिदास भी उसे केवल सहानुभूति ही दे पाता है और चुपके से छोड़कर चले जाने के अतिरिक्त उससे कुछ भी नहीं बन पड़ता। माल्लिका के लिए कालिदास उसके सम्पूर्ण व्यक्तिव के, जीवन में, साथ एकाकार सुदूर स्वप्न की भांति है, कालिदास के लिए मल्लिका उसके प्रेरणादायक परिवेश का एक अत्यंत जीवंत तत्व मात्र। अनन्यता और आत्मलिप्तता की इस विसदृशता में पर्याप्त नाटकीयता है, और मोहन राकेश जिस एकाग्रता, तीव्रता और गहराई के साथ उसे खोजने और व्यक्त करने में सफल हुए है वह हिन्दी नाटक के लिए सर्वथा अपरिचित है।

मूल शब्द : आत्मविस्मृत, पुरुषसत्तात्मक, आत्मलिप्तता, विसदृशता, तेजस्वी, परिणिति, उत्कृष्ठ, भार्या, सर्वस्व, त्रासदी, त्रिकोण, मध्यवर्ग।

प्रस्तावना : 'आषाढ़ का एक दिन' में भी महत्वकांक्षा सृजनशीलता, शरीरी और अशरीरी के बीच चेतना की संकृति एवं पीड़त व्यापक है। मल्लिका प्रकृति एवं सच्चे प्रेम की प्रतीक लगती है और कालिदास रचनाधर्मी व्यक्तित्व के परिवेश के साथ उसके असंगति, उसकी निजी जीवन अवलोकन में पृथककता एवं द्वेष पैदा करती है। कालिदास की नाराजगी और मोहभंग केवल परिवेश से ही नहीं स्वयं अपनी समझ एवं प्रकृति के प्रति भी है, जिसके साथ नाटक के अन्त में एक और मात्रा को आरम्भ करता है। बिना कालिदास के चाहे हुए भी इस प्रक्रिया में मल्लिका का उत्कृष्ठ आत्मसमर्पण नितांत अकेला छूट जाता है-सीता के भू-समाधि की तरह। विलोम भी एक दूसरे स्तर पर प्राप्त करने के प्रसंग में खण्डित और धूरनरित होता है। अनजान, अबोध मातुल, सामान्य दैनन्दिन स्तर पर पंगु होते हुए भी बाहय सामाजिक संक्राति के

मूल्यों की पंगुता का प्रतीक बन सके, ऐसी कोशिश है।

शोध के उद्देश्य : इस बोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है :-

1. समय के साथ इच्छा के द्वन्द्व को विश्लेषित किया गया।
2. आधुनिक मानव के प्रेम, संघर्ष व महत्वकांक्षा की त्रासदी को दर्शाया गया है।
3. सत्ता और कला के द्वन्द्व को रेखांकित किया गया है।
4. नारी के प्रेम की उदान्तता को चित्रित किया गया है।
5. यह नाटक आधुनिक मानवीय रिश्तों की जटिलता और सफलता के मूल्य के रुप में अत्यंत प्रासंगिक है।

'आषाढ़ का एक दिन' में स्त्री-पुरुष के सम्बंधों का मनोविश्लेषण : मोहन राकेश 'आषाढ़ का एक दिन' में भारतीय स्त्रियों का एक त्रिभुज रचते है- अम्बिका- मल्लिका-प्रियंगुमंजरी। तीनों के मूल में एक पुरुष है- कालिदास। आम्बिका अतीत की मल्लिका कहा है, जो शारीरिक रुप से क्षीण हो चुकी है, अब उसकी एक ही इच्छा है फिर भी वह उन्हीं से गले लगकर जिए चली जाती है और प्रियंगुमंजरी एक पुरुष को अपने केन्द्र में रखकर अपनी राजनीतिक महत्वकांक्षा की पूर्ति करना चाहती है। तीनों की नियति अकेलेपन की है, तीनों पुरुषसत्तात्मक समाज में धीरे-धीरे एकांकी होती स्त्रियाँ है। तीनों एक दुसरे को प्रदीप्त करती है। यद्यपि अम्बिका अपनी पुत्री मल्लिका की विरोधी लगती है। मल्लिका अपने प्रियतम की भार्या के बड़प्पन के दंभ से क्षत-विक्षत होती है तथा प्रियंगुमंजरी भी उन दोनों से नितान्त पूर्ण रुप से अपने सर्वोच्च और श्रेष्ठ मानती है किन्तु तीनों एक ही प्रकार से केवल 'पुरुष' को अपने-अपने ढंग से जीवन का केन्द्र बनाती है। विडम्बना यह है कि अम्बिका विधवा है, जहाँ पुरुष का अभाव है, मल्लिका का प्रियतम उससे दूर है और राजदुहिता प्रियंगु का सारा प्रयत्न यही है कि उसका पुरुष उससे छिटक न जाए- "वे भी जब-तक यहाँ के जीवन की चर्चा करते हुए आत्मविस्मृत हो जाते है। इसलिए राजनीतिक कार्यों से कई बार उनका मन उखड़ने लगता है। (फिर उनकी आँखें मल्लिका के मुख पर स्थिर हो जाती है।) ....साहित्य उनके जीवन का प्रथम चरण था। अब वे दुसरे चरण में पहुँच चुके हैं। मेरा अधिक समय उसी आयास में बीतता है कि उनका बढ़ा हुआ चरण पीछे न हट जाए।........... बहुत परिश्रम पड़ता है इसमें। प्रियंगु पुरुष को अपने से बाएँ रखना चाहती है (यद्यपि वह सफल नहीं होती), जबकि मल्लिका पुरुष को अपने से बहाने मुक्त कर देती है। भारतीय पुरुषसत्तात्मक समाप्त का यही गति विज्ञान है।

मल्लिका को अपूर्णता में भी अपना जीवन सार्थक लगता हैं क्योंकि जिस पुरुष से उसने प्रेम किया वह अनवरत अपनी प्रतिभा का प्रकाश फैला रहा है। वह अपने पुरुष को विशिष्ट मानती है स्वयं को अत्यंत साधारण। पुरुष के हर विचलन की युक्ति स्त्री के पास होती है। वह स्वयं अपने लिए कुछ नहीं चाहती, वह सिर्फ पुरुष की पूर्णता में ही अपनी पूर्णता समझती है :- " (मल्लिका डयोढ़ी का किवाड़ बंद कर देती है। उसकी आँखें मूंद जाती है।) सोचती थी तुम आओगे तो उसी तरह मोह घिरे होगे, वैसा ही अंधेरा-सा दिन होगा। (मॉथे पर रखा ग्रंथ उठा लेती है।) कहूँगी की देखों....... ये तुम्हारी नई रचना के लिए हैं। ये कोरे पृष्ठ अपने हाथों से बनाकर रखिए है। इन पर जब जो भी लिखोगे, उसमें मुझे अनुभव होगा कि मैं भी कहीं हूं, मेरा भी कुछ है। (निःश्वास छोड़कर ग्रंथ रख देती है।)

मल्लिका 'आषाढ़ का एक दिन' की त्रासदी नायिका बनकर उभरती है। त्रासदी के पात्र को आंतरिक रुप से भला होना चाहिए और उसमें कुछ ऐसी निर्बलताएं होनी चाहिए जो उसे त्रासदी के परिणाम की ओर ढकेले। भावना ही मल्लिका की क्षीणता है और वह यहाँ कोई समझौता नहीं करती। कालिदास के चले जाने के बाद विपरीत परिस्थितियों लोकनिंदा के बीच वह अपने भावना सूत्रों को हृदयवन्त से खींचती है। यद्यपि दैन्यता और भौतिक जीवन के अभाव उसे विलोम की वारांगणा बना देता है (पुरुष के समक्ष वह हर समर्पण जिसमें स्त्री की इच्छा शामिल नहीं है, वैश्यावृत्ति ही है-मल्लिका ऐसा ही मानती है)।

फिर भी सारी टूट-फूट के बावजूद वह अपने भाव की सन्दूक को रिक्त नहीं होने देती। कालिदास की

सारी रचनाएं उसने संभालकर रखी है। इसलिए कालिदास के राजकन्या से विवाह से नहीं उसके संन्यास का संदेश उसे अन्दर से तोड़ देता है। उसे लगता है वह समर्पण को उल्लासमयी प्रसन्नता से भी विमुख कर दी गई है : "कुहनियाँ आसन पर रखकर बैठ जाती है ग्रन्थ हाथ में उठा लेती है।................. मैंने यह सब सह लिया। इसलिए कि मैं टूटकर भी अनुभव करती रही कि तुम बन रहे हो। क्योंकि मैं अपने को अपने में न देखकर तुममें देखती थी। और आज यह सुन रही हूँ कि तुम सब छोड़कर संन्यास ले रहे हो उदासीन मुझे मेरी सत्ता के बोध से इस तरह वंचित कर दोगे।" .... इसलिए जब कालिदास वापस आकर कहता है कि वह अथ से आरम्भ करना चाहता है, तो उसे अपनी भावना की अर्थपूर्णता की पुन: अनुभूति होती है, लेकिन कालिदास मल्लिका के वर्तमान का सामना नहीं कर पाता और पलायन करता है। मल्लिका कोई पलायन नहीं करती वह अन्त-अन्त तक रणभूमि में अडिग रहती है, इसलिए वह पूर्णत: पराजित होकर त्रासद नायिक का तेजस्वी चरित्र पा लेती है।

पुरुष और स्त्री सम्बन्धों की यह विडंबना है कि मल्लिका जीवन भर जिसे चाहती रही वहीं उसका नहीं हो सका। वह विलोम और कालिदास दोनों के बीच जीती रही वह पत्नी भी है और प्रेयसी भी। इस दुविधाजनक स्थिति का चित्रण करते हुए डॉक्टर गोविन्द चातक ने लिखा है, " कि इस प्रकार दो पुरुषों के बीच मल्लिका जिन संबंधों को जीती है उनमें प्रेम और घृणा आत्मआग्रह और आत्मदान, समर्पण और विद्रोह का अद्भुत समन्वय है, किंतु इस पर भी उसका प्रेम भरा पूरा लगत है और विसंगति के बावजूद भी उपलब्धि और उदारता का अपूर्ण एहसास दिलाता है।"

नाटक में घटनास्थल मल्लिका का हार है। उसके हार की बदलती हुयी स्थिति ही तीन अंकों के विभाजन को सार्थक बनाती है। इस प्रकार एक ही स्थान पर समय की गति के साथ बदलता हुआ परिवेश समय के हाथों उत्पीड़न मानव नियति की कथा कहता है। वह नियति है मल्लिका की और उसका निमित्त है कालिदास। नरेन्द्र त्रिपाठी लिखते है " प्रेम के त्रिकोण के इस नाटक में दो पुरुष और एक नारी है। यह पुरुष पात्र है कालिदास और विलोम व स्त्री पात्र मल्लिका। मल्लिका चूँकि एक बुद्धिमान और कोमल भावनाओं की स्त्री है, वह जानती है कि विलोम कहां सबल है और कालिदास कहां निर्बल है। इसलिए वह बड़ी चौकन्न रहती है कि दोंनो का सामना ना हो पाए और जब भी कभी यह दोनों मिल जाते है तो मल्लिका की चिंताओं की रेखाएं और अधिक गहरी हो जाती है पर होता वहीं जो आशंका मल्लिका को रहती है। नियति की विडंबना वश अंतत: मल्लिका का शरीर विलोम को प्राप्त हुआ और ख्याति कालिदास को।"

परिस्थिति, क्रिया और काल की प्रक्रिया से मनुष्य अपने को गढ़ता है। इसमें वह हर क्षण अपने को बनाता मिटाता है। जीवन का एक-एक क्षण जब अपनी सक्रियता में व्यक्ति से जुड़ता है तो व्यक्ति वही नहीं रह जाता है जो कभी था। सारे-नाटकीय संघर्ष के दौरान कालिदास, मातुल, मल्लिका आदि पात इसी एहसास को दिलाते हैं। विलोम इसी एहसास से प्रेरित उज्जयिनी को प्रस्थान करते कालिदास पर टिप्पणी करता है : ' तुम अभी तक वही व्यक्ति नहीं हो जो कल तक थे।" .... और कालिदास आगे अपने व्यवहार से इस आशंका को सार्थक करता है। उज्जयिनी जाकर वह दूसरा व्यक्ति हो जाता है। यह स्थिति ही मल्लिका और स्वयं उसकी कारुणिक परिणति के लिए उत्तरदायी बनती है। किन्तु दूसरा आदमी बन जाना मानव की नियति भी है। कालिदास जानता है कि नए जीवन की नई अपेक्षाएँ होती है। मल्लिका और निक्षेप कालिदास को इस सन्दर्भ में समझने की कोशिश भी करते हैं। जीवन जब साधारण से असाधारण स्थिति में पहुंचता है तो उसे असाधारण की ही अपेक्षा होती है। इसीलिए मल्लिका बहुत पीछे छूट जाती है। राजकवि और राजपुरुष की अर्जित प्रतिष्ठा कालिदास से गुप्त कुल की राजदुहिता का वरण करवाती है। कभी अभाव मल्लिका से विवाह न हो सकने का कारण था, अब ऐश्वर्य और असाधारणता उससे भी बड़ा कारण बन जाती है कालिदास जब काश्मीर जाते हुए गाँव आता है, पर मल्लिका से नहीं मिलता है। यही मोहभंग होता है और राजशक्ति के साथ जुड़ी विसंगत करता मुखर होती है। अनुस्वार, अनुनासिक, दंतुल, रागिणी, संगिनी, प्रियंगुमंजरी सब उसके प्रतीक हैं। इनके माध्यम से

मल्लिका की चेतना में कोमल बध्य पर रखें पत्थर की भॉति सत्ता का कर यथार्थ उभरता हैं। गांव में आकर वातावरण इकटठा करने के नाम पर पत्थर, वनस्पति जन्तु आदि एकत्र करना मातुल के परिवार को साथ ले जाना, मल्लिका के सामने हार का परिष्कार करने का प्रस्ताव रखना और फिर 'जिसे तुम अपने योग्य समझों विवाह कर लो' की बात करना उसी का अंग है। उस ऐश्वर्ययोगी वर्ग के लिए ग्रामीण प्रकृति और जन यहाँ तक कि मल्लिका भी कुतूहल और उपयोग के उपादान मात्र है। इसीलिए प्रियंगु मल्लिका की आन्तरिक भावनाओं को कहीं पकड़ हीं नहीं पाती। वह जिस प्रकार कृत्रिम साधनों से कालिदास के अभावों की भरना चाहती है स्थिति की यह मार्मिकता पाठक प्रेक्षक में तीव्र भावना जगाती है।

यही आकर पूर्व स्थिति का/मल्लिका की भावना के वरण का क्रूर व्यंग्य उभरता है। विलोम और अम्बिका की वाणी और घटनाओं की परिणति में नाटक की आयरनी जैसे अपने सत्य को प्रतिष्ठित करने लगती है। और ऐसी ही एक स्थिति में जब प्रियंगु मल्लिका से प्रश्न कर बैठती है, 'क्यों', तुम्हारे मन में .... कल्पना नहीं कि तुम्हारा अपना घर-परिवार हो? तो अम्बिका सहसा फूट पड़ती है। 'इसके मन में यह कल्पना नहीं है क्योंकि यह भावना के स्तर पर जीती है।" कितना बड़ा व्यंग्य वह अनायास ही उस पर उगल देती है। जिससे मल्लिका तड़प उठती है, किन्तु उससे भी बड़ी तड़प उसकी अपनी है, जिसके शब्द गले में अटक जाते हैं। यहीं कालिदास का दोहरा व्यक्तिव साफ नजर आने लगता है। इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है कि प्रियंगु जिस प्रदेश के सौन्दर्य पर मुक्त होकर कह उठती है" " इस सौन्दर्य के सामने सब सुविधाएं हेय है' उसी में जन्म लेकर कालिदास उस सौन्दर्य को छोड़कर सुविधाएं के पीछे दौड़ पड़ता है मल्लिका के लिए मेघ अब भी बरसते है, किंतु कालिदास उस सौन्दर्य को छोड़कर सुविधा के पीछे दौड़ पड़ता है। मल्लिका के लिए मेघ अब भी बरसते है, किन्तु कालिदास का आकाश जैसे अनभ्र हो जाता है-दया और करूणा से विहीन अन्ततः कालिदास की उपेक्षा उस अयाचित स्थिति को पैदा करती है जिसकी माल्लिका ने कभी कल्पना भी नहीं की थी। मल्लिका उस विलोम की पत्नी बनने को बाध्य होती है जिसे कभी वह 'अयाचित अतिथि' मानती आई थी और अब जिसके साथ अपने सम्बन्ध को लेकर वह अपने को वारांगना कहती है। मल्लिका बाहर से टूटकर भी भीतर से कालिदास से जुड़ी रहती है। मन की कविता के द्वन्द्व टूटने नहीं देती पर तन और मन का यह विभाजन उसे व्यक्ति से विशेषण बना डालता है।

कालिदास 'आषाढ़ का एक दिन' की एक ऐसी अकथा है जो मल्लिका की त्रासदी कथा की पराकष्ठा के लिए अपरिहार्य हो गई है। आश्चर्य है कि कालिदास भावनामय होते हुए भी व्यवहारवादी नजर आता है। यह अपने घर में भी सफल होना चाहता है और बाहर भी। वह स्त्री पर आधिपत्य भी जमाना चाहता है और मुक्त की रखना चाहता है, वह दायित्व नहीं लेता। यह स्वच्छन्दतावादी युग का कवि नहीं है जो स्वाभिमान के आहत होने पर भी प्रणत अपने मार्ग पर चलता रहता है। वह आजादी के बाद विकसित हो रहे भौतिकवादी मध्मवर्ग का प्रतिनिधि है, उसमें अपने अभाव को तीव्र प्रतिक्रिया का भाव है, यह समाज से प्रतिशोध लेना चाहता है, इसलिये वह राजकवि बनने उज्जयनी चला जाता है।

मोहन राकेश ने कालिदास के एक विलोम चरित की रचना कर उसे पूर्ण करने का प्रयास किया है। यह अद्भुत अभिनयपूर्ण प्रयोग है, अपने उद्देश्य में पूर्ण सफलता यह विलोम दरअसल वह कालिदास है जो भावना को पूर्णतः समाप्त कर चुका है। वह अपनी अंतरमन की आश्यकता की पूर्ण उपेक्षा कर चुका है और संसार के दलीलों पर चलने के लिए तैयार हो गया है। विलोम में रह गयी है- मध्यमवर्गीय व्यक्ति का असंतोष, भावनारहित, व्यंग्य, उपहास, कठोरता और चतुरता। वह कालिदास की ही प्रतिछाया है। वह इसलिए कालिदास को वरैने ही जानता है कोई अपने उतारे हुए वस्त्र को। विलोम के अंदर से कालिदास ही बोलता है। वह पीछे छूट गया कालिदास है जो मल्लिका को अपनी वारांगणा बनाता है। विलोम का यह अनुमान सत्य है कि वह असफल कालिदास है लेकिन उसका यह अनुमान असत्य है कि कालिदास सफल विलोम है। कालिदास सफल विलोम कभी नहीं बन पाता है।

कालिदास की त्रासदी यह है कि वह भावना में भी जीना चाहता है और व्यावहारिक जीवन में भी सफल होना चाहता ह जो पूंज़ी वर्ग में सम्भव नहीं। इसी अर्थ में 'आषाढ़ का एक दिन' भारतीय मध्यवर्ग की नियति की गाथा है। भावना-मूल्य और लौकिक संसार की सफलता के मध्य द्वन्द्व दोनों को एक साथ पाने की कोशिश में बच जाता है केवल आदत व्यक्तित्व। कालिदास स्वतंत्र भारत में उसी आदत मध्यवर्गीय व्यक्ति का प्रतीक है। " उज्जयिनी में रहकर कालिदास न तो यथाशक्ति को स्वीकार कर पाता है और न नकार पाता है जो भी घटित हो उसका अर्थ अपने मन के अनुकूल लगाकर संतोष पाने की इच्छा तथा प्रयत्न वह करता रहता है। वह अपने राजकीय वैभव के नए वातावरण के अनुकूल स्थापित करने का प्रयत्न करता है अपने इन प्रयास में परिस्थिति के वश में पड़कर राजदुहिता प्रियंगुमंजरी के साथ विवाह भी करता है। लेकिन वह अपने को उस नए परिवेश में नितांत अकेला पाता है।"

"उज्जयिनी का वर्तमान कालिदास के प्रकृति के प्रतिकूल सिद्ध होता है। उसकी सृजनात्मक प्रतिभा राज कर्तव्य और साहित्यिक अपेक्षाओं से उत्पन्न विषमताओं से पीड़ित होकर अंतद्वन्द्व का अनुभव करते है। इस द्वन्द्व से मुक्त होने के लिए वह अपने निजी वातावरण में लौट आना चाहता है लेकिन निर्मम यथार्थ उसे ऐसा करने नहीं देता।"

निष्कर्ष : यह कहा जा सकता है कि मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों का मनोविश्लेषण के अन्तर्गत मल्लिका और कालिदास व विलोम के अन्तद्वन्द्व, प्रेम व सत्ता-संघर्ष का एक गहरा समन्वय नजर आता है। मल्लिका इस नाटक में समर्पण त्याग व उदात्त प्रेम की प्रतीक है तो वही कालिदास भावनात्मक द्वन्द्व, अस्तित्व की रिक्तता ' का और विलोम यथार्थ और ईर्ष्या व प्रियंगुमंजरी सत्ता की प्रतीक है। जो मल्लिका के सामने एक अधूरा चरित्र है। इस नाटक में कालिदास के अपराध बोध, मल्लिका के समर्पण और प्रियंगुमंजरी के सत्ता की बीच संघर्ष का नाटक है। मोहन राकेश ने मल्लिका को सबसे उत्कृष्ठ स्थान दिया है, जो समर्पण और त्याग की मूर्ति है जबकि कालिदास सत्ता और साहित्य के बीच परिणत हुआ एक आधुनिक मनुष्य है।

सन्दर्भ ग्रंथ :

1. मोहन राकेश 'आषाढ़ का एक दिन' में पृ.-71.
2. वही, पृ.-71.
3. वही, पृ.-59.
4. डॉ गोविन्द चातक, आधुनिक नाटक का मसिहा: मोहन राकेश, पृ.-54.
5. नरेन्द्र त्रिपाठी: हिन्दी नाटक बदलते आयाम, पृ.-91.
6. मोहन राकेश 'आषाढ़ का एक दिन' में पृ.-75.
7. वही, पृ.-69.
8. टी.साबु, मोहन राकेश के नाटको के पात्र : मनोविज्ञान सम्बन्ध जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी प्रकाशन एवं वितरण, मथुरा (2015), पृ0 116.
9. वही, पृ.-119.

•